

# ओड़ीषा तट की समुद्री मात्स्यिकी: 2020

सुबल कुमार राउल<sup>1</sup>, राजेश कुमार प्रधान<sup>2</sup>, प्रकाश चन्द्र दास<sup>2</sup>, मेनका दास<sup>2</sup>, वी.के.मनु<sup>3</sup> और के. जी. मिनी<sup>3</sup>

<sup>1</sup>भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान दिघा क्षेत्रीय स्टेशन, पूर्व मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल-721441

<sup>2</sup>भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान पुरी क्षेत्रीय केन्द्र, पुरी, ओड़ीषा

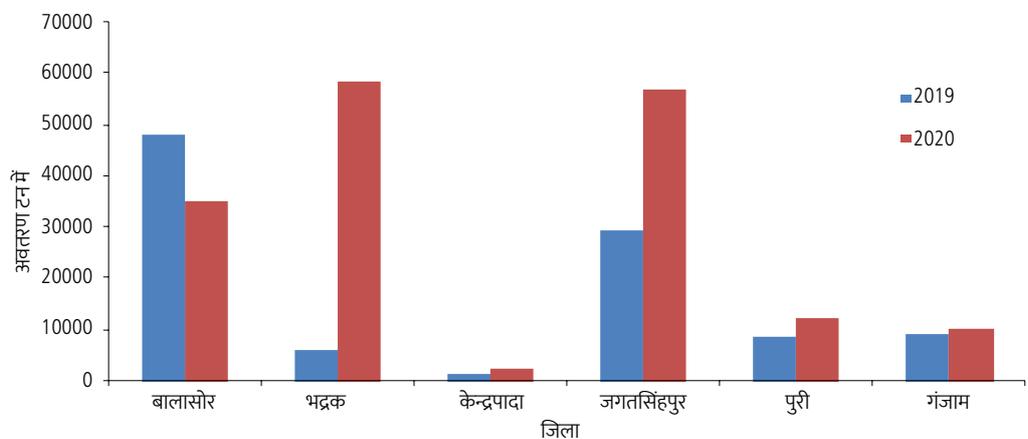
<sup>3</sup>भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्ची, केरल

वर्ष 2020 के दौरान ओड़ीषा तट का समुद्री मछली अवतरण 175261 टन आकलित किया गया, जिसमें पिछले वर्ष के 102143 टन अवतरण से 72% की वृद्धि देखी गयी (चित्र 1)। ओड़ीषा तट के छह समुद्रवर्ती जिलों में, राज्य के कुल समुद्री मछली अवतरण में भद्रक का योगदान सबसे अधिक था (58428 टन), इसके बाद जगतसिंगपुर (56856 टन), बालसोर (35109 टन),

पुरी (12411 टन), गंजम (10035 टन) और केन्द्रपादा (2423 टन) का योगदान है (चित्र 2)। ग्रुपवार योगदान में, वेलापवर्ती पख मछली संसाधनों का योगदान करीब 44% (77566 टन) था, इसके बाद तलमज्जी पख मछली संसाधनों का 35% (60900 टन), क्रस्टेशियन 16% (27608 टन) और मोलस्कन 4% (7351 टन) योगदान है (चित्र 3)। सेक्टरवार योगदान में, उक्त अवधि



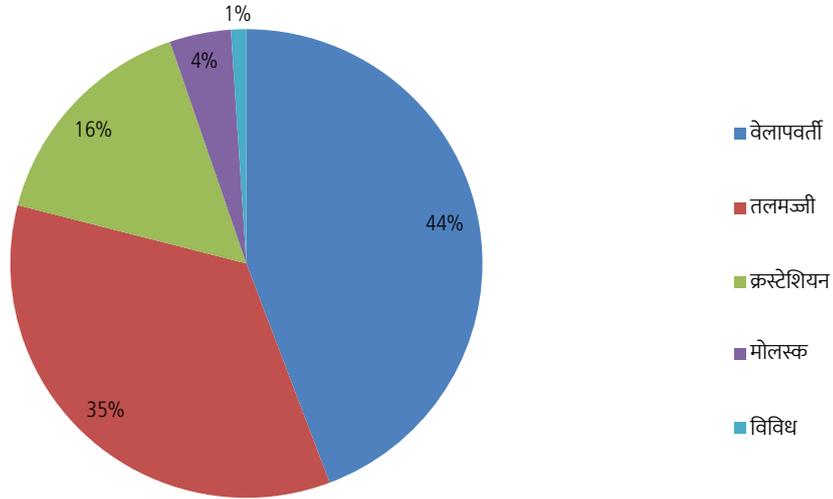
चित्र 1. वर्ष 2007-2020 के दौरान ओड़ीषा तट पर समुद्री मछली पकड़ की प्रवृत्ति



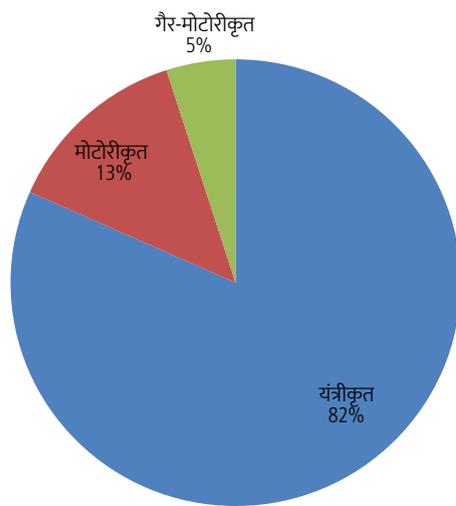
चित्र 2. वर्ष 2007-2020 के दौरान ओड़ीषा तट पर समुद्री मछली पकड़ का योगदान

के दौरान राज्य के कुल समुद्री अवतरण में यंत्रिकृत मत्स्यन पोतों का योगदान 82% (143103 टन) था, इसके बाद मोटोरीकृत यानों का योगदान 13% (23445

टन) और गैर-मोटोरीकृत मत्स्यन पोतों का 5% (8714 टन) था (चित्र 4)। यंत्रिकृत बहुदिवसीय आनायकों (एम डी टी एन) द्वारा 122488 टन की उच्चतम पकड़ प्राप्त



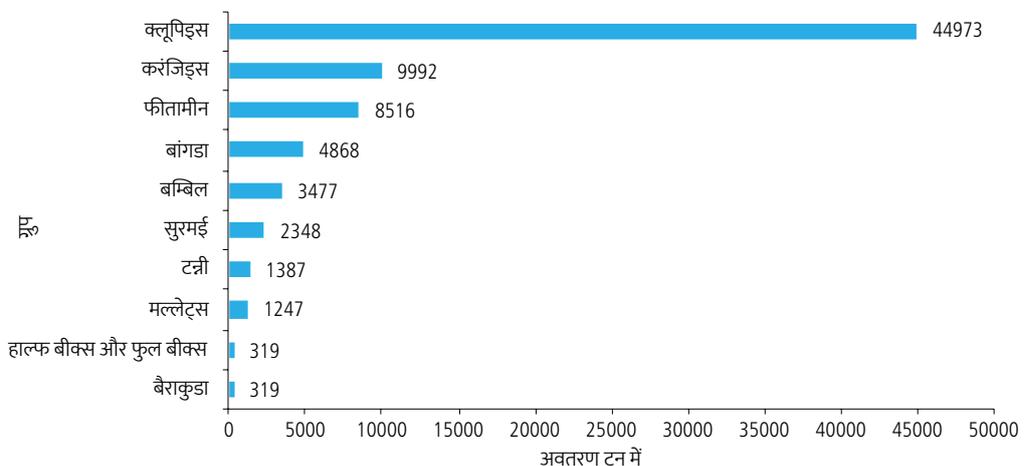
चित्र 3. वर्ष 2020 में ओड़ीषा तट पर कुल समुद्री मछली अवतरण में व्युपवार योगदान



चित्र 4. वर्ष 2020 में ओड़ीषा तट पर कुल समुद्री मछली अवतरण में सेक्टरवार योगदान

हुई, इसके बाद यंत्रिकृत गिल जालों (एम जी एन) द्वारा 20455 टन और मोटोरीकृत गिल जालों (ओ बी जी एन) द्वारा 15043 टन की पकड़ प्राप्त हुई।

**वेलापवर्ती संसाधन** (चित्र 5): वर्ष 2020 में 77566 टन वेलापवर्ती संसाधनों का अवतरण दर्ज किया गया, जो पिछले वर्ष की अपेक्षा 48% अधिक था। इस अवधि में, पकड़ का सिंह भाग क्लूपिड्स थे, जो कुल वेलापवर्ती अवतरण का 58% था (44973 टन) और ओड़ीषा तट के कुल समुद्री अवतरण का 26% था। मात्स्यिकी में योगदान किए गए अन्य वेलापवर्ती संसाधन, करंजिड



चित्र 5. वर्ष 2020 में ओड़ीषा तट पर अवतरण किए गए प्रमुख वेलापवर्ती पखमछली संसाधन

(9992 टन, 13%), फीतामीन (8516 टन, 11%, चित्र 6), बांगडा (4868 टन, 6%), बम्बिल (3477 टन, 4%), सुरमई (2348 टन, 3%), ट्यूना (1387 टन, 2%), मल्लेट (1247 टन, 2%), हाफबीक्स और फुलबीक्स (319 टन, <1%) और बैराकुडा (319 टन, <1%)।

क्लूपिडों में सारडिनेल्ला फिम्ब्रिएटा (चित्र 7) प्रमुख मात्स्यिकी (13094 टन) है, इसके बाद इलीशा

मेगालोप्टीरा (5127 टन), कोइलिया डसुमेरी (3951 टन), इलीशा मेलास्टोमा (2108 टन), एस्कुलोसा थोराकेटा (1858 टन चित्र 8), टेनुलोसा इलीशा (1818 टन चित्र 9) और अन्य आते हैं।

**तलमज्जी संसाधन** (चित्र 10): वर्ष 2020 में दर्ज किया गया तलमज्जी मछली अवतरण 60900 टन था, जो पिछले वर्ष की अपेक्षा 93% अधिक था। इस



चित्र 6. वर्ष 2020 में ओड़ीशा के बालसोर के बहाबलपुर मछली अवतरण केन्द्र पर अवतरण किया गया फीतामीन अवतरण



चित्र 7. वर्ष 2020 में ओड़ीशा के बालसोर बहाबलपुर मछली अवतरण केन्द्र पर अवतरण की गयी अन्य तारलियों का दृश्य

अवधि के दौरान क्रॉकेर्स सबसे प्रमुख गुप था, जो कुल तलमज्जी अवतरण का 34% था (20625 टन चित्र 11) और ओड़ीषा तट के कुल समुद्री अवतरण का 12% था। मात्स्यिकी में योगदान किए गए अन्य वेलापवर्ती संसाधन, पाम्फ्रेट्स (12213 टन, चित्र 12), पेर्चस (9231 टन), शिंगटी (8034 टन), चपटी मछली (2969 टन), मुल्लन (2483 टन), उपास्थिमीन (2042 टन), सूत्रपख (1349 टन), ईल (1319 टन) और गोटफिश (365 टन)।

क्रॉकेर्स में *ओटोलिथस* रूबर प्रमुख मात्स्यिकी (5723 टन) थी, इसके बाद *जोनियस कारुट्टा* (4031 टन), *पेन्नाहिया एनिया* (3074 टन), *क्रिसोचिर ऑरियस* (1959 टन) और अन्य प्रजातियाँ शामिल थीं।

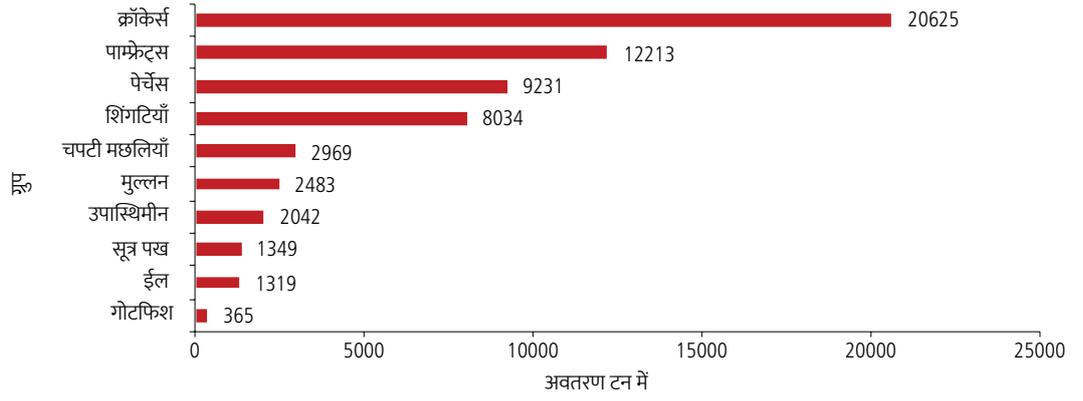
**क्रस्टेशियन संसाधन** (चित्र 13): वर्ष 2020 में ओड़ीषा के कुल अवतरण में से 27.6 हजार टन क्रस्टेशियनों का



चित्र 8. वर्ष 2020 में ओड़ीषा के बालसोर के बहाबलपुर मछली अवतरण केन्द्र पर अवतरण की गयी सफेद तारलियों का दृश्य



चित्र 9. वर्ष 2020 में ओड़ीषा के बालसोर के बहाबलपुर मछली अवतरण केन्द्र में हिल्सा अवतरण का दृश्य



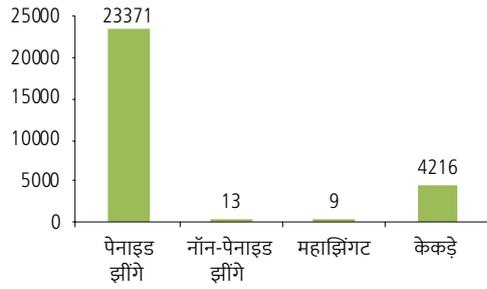
चित्र 10. वर्ष 2020 में ओड़ीषा तट पर अवतरण किए गए प्रमुख तलमज्जी पख मछली संसाधनों का दृश्य



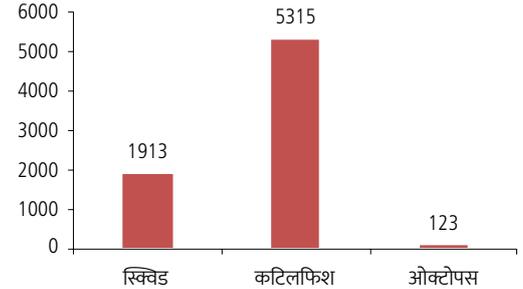
चित्र 11. वर्ष 2020 में ओड़ीषा के बालसोर के बहाबलपुर मछली अवतरण केन्द्र पर क्रॉकर अवतरण का दृश्य



चित्र 12. वर्ष 2020 में ओड़ीषा के जगतसिंहपुर में पारादीप मत्स्यन पोताश्रय में पाम्फ्रेट अवतरण का दृश्य



चित्र 13. वर्ष 2020 के दौरान ओड़ीषा तट पर अवतरण किए गए प्रमुख क्रस्टेशियन संसाधनों का दृश्य



चित्र 15. वर्ष 2020 के दौरान ओड़ीषा तट पर अवतरण किए गए प्रमुख मोलस्कन संसाधनों का दृश्य

योगदान था, जो ओड़ीषा के कुल अवतरण का करीब 15.75% था और पिछले वर्ष के अवतरण की अपेक्षा 109.18 प्रतिशत अधिक भी था। इस ग्रुप के अंतर्गत आने वाले प्रमुख संसाधन पेनिआइड झींगे (84.7%, चित्र 14), इसके बाद केकड़े (15.23%), नोन-पेनिआइड झींगे (0.04%) थे और महाचिंगटों का सबसे कम अवतरण (0.03%) प्राप्त हुआ। पेनिआइड झींगों के अवतरण में पिछले वर्ष की तुलना में 131% की वृद्धि दर्ज की गयी। केकड़ों में प्रमुख रूप से केवल 3 प्रजातियाँ थीं। पी. सान्विनोलेन्टस का उच्चतम अवतरण था, इसके बाद सी. फेरियाटस, पी. पेलाजिकस और अन्य पोर्टूनिड केकड़ों का सबसे कम योगदान हुआ। पिछले वर्ष की तुलना में केकड़ों के अवतरण में 49.7% की वृद्धि देखी गयी।

**मोलस्कन संसाधन** (चित्र 15): वर्ष 2020 के दौरान ओड़ीषा तट पर अवतरण किए गए मोलस्कों में 7.35 हजार टन अवतरण के साथ शीर्षपाद प्रमुख संसाधन था, यह राज्य के कुल समुद्री अवतरण का 4.19% था (चित्र 16)। शीर्षपादों के अवतरण में पिछले वर्ष की अपेक्षा 99.34% की वृद्धि देखी गयी। शीर्षपादों के अवतरण में कटिल फिश (72.3%) प्रमुख थे, जिसके बाद स्क्विड (26.0%) और ओक्टोपस (1.7%) थे।

कटिल फिश मात्स्यिकी में सेपिएल्ला इनेर्मिस, सेपिया अक्युलीटे, सेपिया फरोनिस और सेपिया एल्लिप्टिका प्रमुख थे। लेकिन स्क्विड मात्स्यिकी में अकेले रूप से



चित्र 14. वर्ष 2020 में ओड़ीषा के जगतसिंहपुर में पारादीप मत्स्यन पोताश्रय में महाचिंगट अवतरण का दृश्य



चित्र 16. वर्ष 2020 में ओड़ीषा के जगतसिंहपुर में पारादीप मत्स्यन पोताश्रय में शीर्षपाद अवतरण का दृश्य

यूरोट्यूथिस (पी.) डुवासेल्ली प्रमुख थे। रोचक बात यह है कि शीर्षपाद पकड़ का 99% पारादीप, धमरा, बालरामगड़ी और बहाबलपुर अवतरण केन्द्रों में

परिचालित बहुदिवसीय आनायकों से प्राप्त हुआ और शेष तटीय समुद्र में परिचालित बैग नेटों, गिल जालों और वलय संपाशों से प्राप्त हुआ।